उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर के संदर्भ में अध्ययन

तनुज कुमार *
श्याम सुन्दर कुशवाहा **

इस शोध पत्र में उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर के संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित था। न्यादर्श हेतु झाँसी शहर के विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय परिसर से उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा उच्च शिक्षा स्तर के सत्र 2019–20 में अध्ययनरत 300 छात्रावासीय एवं 300 गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों का चयन किया गया था। प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया था। शैक्षिक व्यवहार का मापन तीन आयामों यथा अध्ययन आदतें, शैक्षिक निष्पादन तथा तकनीक का प्रयोग पर आधारित था। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं t-परीक्षण का प्रयोग किया गया था। प्रदत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप पाया गया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीक प्रयोग व्यवहार को आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर प्रभावित करते हैं। इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण को उनके अनुरूप बनाने में सहायता मिल सकेगी तथा विद्यार्थियों को महाविद्यालय, अध्यापक, मित्रों आदि के साथ उचित सामंजस्य विकसित करने हेतु प्रेरित किया जा सकेगा।

शिक्षा मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास का सबसे सरल, व्यवस्थित व प्रभावी तरीका है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य ने जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि की है। साथ ही शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में पूर्व निर्धारित अशिक्षित परिवर्तन करने का प्रयास किया जाता है। जो राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तथा विद्यार्थियों की स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं। इन सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया सम्पादित की जाती है। विद्यार्थियों ने सीखने के प्रतिफलों को किस सीमा तक प्राप्त किया है, यह उनके शैक्षिक निष्पादन को

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, संभल, उत्तर प्रदेश 244 302
** *एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष*, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश 284 002

© NCERT not to be republished

भी बताता है। शैक्षिक निष्पादन से विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल तथा अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की अभिव्यक्ति होती है। विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में विद्यालय का वातावरण, परिवार, अध्यापक का व्यवहार, अध्ययन विधि एवं विद्यार्थियों की योग्यता आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें उनकी अध्ययन आदतें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नोट्स तैयार करना, अभ्यास करना, एकाग्रतापूर्वक अध्ययन करना, अध्ययन में सहायता करना, समूह में अंत:क्रियात्मक व्यवहार और समय-सारणी अनुसार अध्ययन आदि प्रमुख अध्ययन आदतें हैं।

विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार में तकनीकी का प्रयोग भी एक प्रभावशाली घटक है। अध्यापक विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए नई-नई तकनीकी का प्रयोग कर रहे हैं जिससे विद्यार्थियों को अधिकतम अधिगम कराया जा सके। विद्यार्थी भी ज्ञान प्राप्ति के लिए केवल कक्षा-शिक्षण तथा पाठ्यपुस्तकों पर ही आश्रित नहीं हैं। वे ज्ञान प्राप्ति के लिए नई-नई तकनीक, यथा— इंटरनेट, कंप्यूटर, ऑनलाइन कक्षा, ऑनलाइन ट्यूटोरियल, अभिक्रमित अनुदेशन, यू-ट्यूब, ई-बुक्स, ई-लाईब्रेरी, मोबाईल लर्निंग आदि तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं।

शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए अध्यापक, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम तथा विद्यालय आदि क्षेत्रों में निरंतर शोध कार्य होते रहे हैं। इन शोध अध्ययनों का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का समाधान तथा नवाचारों को बढ़ावा देना होता है। यद्यपि छात्रावास शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। परंतु छात्रावास शोध के क्षेत्र में मुख्य विषय अभी तक नहीं बन पाया है। विद्यार्थी जीवन में छात्रावास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छात्रावासों का विद्यार्थियों के व्यवहार पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है। प्राचीन काल में विद्यार्थी घर से बाहर गुरूकुलों, आश्रम, मठ तथा विहारों में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इन संस्थाओं ने विद्यार्थियों में उत्तम चरित्र, नैतिकता तथा अच्छे नागरिक बनने के गुणों को विकसित करने में योगदान दिया था। छात्रावास केवल शिक्षा व्यवस्था से जुड़ा हुआ एक आवासीय स्थान मात्र नहीं है। बल्कि यह विद्यार्थियों की एक जीवन शैली है। पूर्ववर्ती शोधार्थियों ने छात्रावास के इसी महत्व के कारण छात्रावासीय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन, छात्रावासीय वातावरण के प्रति संतुष्टि, संवेगात्मक परिपक्वता, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि आदि चरों के आधार पर शोध अध्ययन किए हैं। जिस प्रकार विद्यार्थी के व्यवहार पर विद्यार्थी के परिवार, विद्यालय तथा समाज आदि का प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों पर छात्रावासीय वातावरण का भी किसी न किसी रूप में प्रभाव पड़ता है। चूँकि, शोधार्थी भी छात्रावास के विद्यार्थी रहे हैं इसलिए उन्होंने विद्यार्थियों के सामाजिक व शैक्षिक जीवन पर छात्रावास के प्रभाव पर शोध अध्ययन करने का निर्णय लिया।

शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार पर विविध शैक्षिक वातावरणों के प्रभाव पर हुए पूर्ववर्ती शोधों का अध्ययन किया गया, जिनमें शाखा (2010), सिंह (2017) तथा नायक व मरकाम (2018) ने शैक्षिक उपलब्धि व शालेय वातावरण में धनात्मक सहसंबंध पाया। नायक (2010) ने ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के

© NCERT not to be republished

विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर पाया। पाण्डेय (2012) द्वारा किए गए शोध अध्ययन में छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कुमार (2012) ने शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया। रिछारिया (2012) ने गृह वातावरण का करियर के प्रति निर्णय लेने की क्षमता पर सार्थक प्रभाव पाया। फैजी एवं अन्य (2014) ने छात्रावासीय जीवन को अपनाने में आने वाली समस्याओं पर जेंडर का कोई प्रभाव नहीं पाया। स्वामी (2015) ने सामाजिक, शैक्षिक व संवेगात्मक समायोजन में गैर-छात्रावासीय व छात्रावासीय विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया। इफ्तेकार (2015) द्वारा किए गए शोध अध्ययन में छात्रावास का विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में सार्थक प्रभाव पाया गया। पाण्डेय (2015) ने पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया। गौड़ व कुमार (2015) तथा मिश्रा (2017) ने शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदत में धनात्मक सहसंबंध पाया। उल व अली (2015) ने छात्रावासीय वातावरण संतुष्टि और शैक्षिक निष्पादन में सार्थक सहसंबंध पाया। चौधरी (2016) ने गृह वातावरण का अध्ययन आदत तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव पाया। चौहान (2016) तथा यादव (2018) ने पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध पाया।

सिंह (2016) ने छात्रावासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय स्तर श्रेष्ठ पाया। उपाध्याय (2016) ने दिवा विद्यार्थियों तथा छात्रावासीय विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया। मुनीर एवं अन्य (2016) ने छात्रावासीय तथा दिवा विद्यार्थियों के संवेगों में सार्थक अंतर पाया परंतु चिंता, निर्भरता तथा उत्तेजना में दोनों समूहों में कोई अंतर नहीं पाया। जैकब एवं कौशिक (2017) द्वारा किए गए शोध अध्ययन में छात्रावासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा दिवा विद्यार्थियों का स्वास्थ्य स्तर अच्छा पाया गया जबकि छात्रावासीय विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति दिवा विद्यार्थियों से अधिक पाई गई। त्रिपाठी व सिंह (2017) ने शालेय सांवेगिक वातावरण का ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समान प्रभाव पाया। शुक्ला (2017) ने शैक्षिक उपलब्धि का समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया। शर्मा और चंदानी (2018) ने छात्रावासीय वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व विकास तथा आत्म-प्रबंधन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पाया। डैडजी (2018) द्वारा किए गए शोध अध्ययन में छात्रावास में तीन वर्ष तक रहने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक, शैक्षिक व नेतृत्व व्यवहार में सकारात्मक वृद्धि पाई गई। जेस्ट और अन्य (2018) द्वारा किए गए शोध अध्ययन में छात्रावासीय तथा दिवा विद्यार्थियों में जेंडर के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। डूलाल (2019) के शोध अध्ययन में छात्रावासीय सुविधाओं का स्तर संतोषजनक पाया गया एवं अध्ययन व्यवस्था में छात्रावासीय वातावरण की सार्थक भूमिका पाई गई।

उक्त संबंधित साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार पर आवासीय वातावरण एवं अन्य चरों के प्रभाव को

© NCERT not to be republished

ज्ञात करने के लिए बहुत से शोध अध्ययन हुए हैं। उपरोक्त शोध अध्ययनों में उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर के संदर्भ में अध्ययन पर कोई शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अत: शोधार्थी द्वारा इसी शोध समस्या का चयन कर शोध अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का उनके आवासीय वातावरण, स्थानीयता तथा जेंडर के संदर्भ में अध्ययन।

प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा

उच्च शिक्षा स्तर

इस शोध अध्ययन में उच्च शिक्षा स्तर से आशय स्नातक स्तर की शिक्षा से है। बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा संचालित स्नातक स्तर के नियमित पाठ्यक्रमों (चिकित्सा तथा विधि को छोड़कर) को इस शोध अध्ययन में उच्च शिक्षा स्तर के रूप में परिभाषित किया गया है।

शैक्षिक व्यवहार

शैक्षिक व्यवहार का संबंध अध्यापक तथा विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जाने वाले क्रियाकलापों से होता है। इस शोध अध्ययन में छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के तीन आयामों शैक्षिक निष्पादन, अध्ययन आदतें, तकनीकी के प्रयोग का अध्ययन किया गया।

इस शोध अध्ययन में शैक्षिक निष्पादन का अर्थ विद्यार्थियों के शैक्षणिक क्रियाकलापों में प्रतिभागिता से है। अध्ययन आदतों में विद्यार्थियों द्वारा नोट्स तैयार करना, अभ्यास करना, ध्यानपूर्वक अध्ययन करना, अध्ययन में सहायता करना, समूह में अंतर्क्रियात्मक व्यवहार, अध्ययन अवधि, अध्ययन विधि और समय-सारणी अनुसार अध्ययन आदि को समाहित किया गया है। तकनीक का प्रयोग से तात्पर्य अध्ययन की प्रक्रिया में आधुनिक यंत्रों यथा मोबाईल, लैपटॉप तथा ऑनलाइन अधिगम कार्यक्रमों से अध्ययन करने से है।

आवासीय वातावरण

सामान्यतः आवासीय वातावरण से तात्पर्य उस वातावरण से है जिस वातावरण में विद्यार्थी रहते हैं। आवासीय वातावरण विद्यार्थी के व्यवहार, स्वभाव तथा विकास को प्रभावित करता है। इस शोध अध्ययन में आवासीय वातावरण के दो पक्ष सम्मिलित हैं—

- **छात्रावासीय वातावरण**— छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों को जो आवासीय वातावरण प्राप्त होता है। इस शोध अध्ययन में उसे ही छात्रावासीय वातावरण माना गया है।
- **गैर-छात्रावासीय वातावरण**— गैर छात्रावासीय वातावरण से तात्पर्य ऐसे विद्यार्थियों से है जो अपने अभिभावकों के साथ अपने आवास में रहते हैं।

स्थानीयता

सामान्यतः स्थानीयता से तात्पर्य व्यक्ति के रहने वाले स्थान से होता है। प्रस्तुत अध्ययन में स्थानीयता के अंतर्गत दो पक्षों को सम्मिलित किया गया है—

- **ग्रामीण क्षेत्र**— ग्रामीण क्षेत्र से तात्पर्य ग्राम पंचायत सीमा के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या से है।

© NCERT not to be republished

- **शहरी क्षेत्र**— शहरी क्षेत्र से तात्पर्य नगरीय निकाय की सीमा के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या से है।

अध्ययन के उद्देश्य

- छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार (अध्ययन आदतों, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीकी के प्रयोग) का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

- छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध प्रक्रिया

अध्ययन विधि

शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था।

प्रतिदर्श

इस शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में झाँसी शहर के विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय परिसर से उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा उच्च शिक्षा स्तर के सत्र 2019–20 में अध्ययनरत 300 छात्रावासीय एवं 300 गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों का चयन किया गया था।

उपकरण

आँकड़ों का संकलन करने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया था जिसमें कुल 50 प्रश्न थे। शैक्षिक व्यवहार का मापन तीन आयामों क्रमशः अध्ययन आदत, शैक्षिक निष्पादन तथा तकनीक का प्रयोग के आधार पर किया गया। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रश्नावली में पाँच प्रतिक्रिया विकल्प यथा पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत के लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2 तथा 1 अंक प्रदान किया गया है। नकारात्मक प्रश्नों का अंकन इसके विपरीत यथा 1, 2, 3, 4 तथा 5 अंक प्रदान करके किया गया था।

प्रयुक्त सांख्यिकीय

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान का प्रयोग किया गया था।

परिणाम एवं विवेचना

छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार की तुलना करने के लिए संकलित प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन तथा दोनों समूह के मध्य शैक्षिक व्यवहार के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान की गणना की गई, जिसे तालिका 1 में दर्शाया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 1— छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के सांख्यिकीय मान

शैक्षिक व्यवहार एवं संबंधित आयाम	विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	स्वतंत्र्यांश	सार्थकता स्तर
अध्ययन आदतें	छात्रावासीय	300	95.98	8.49	8.02	598	>.01
	गैर-छात्रावासीय	300	91.44	4.85			
शैक्षिक निष्पादन	छात्रावासीय	300	70.37	6.17	5.99	598	>.01
	गैर-छात्रावासीय	300	67.69	4.69			
तकनीक का प्रयोग	छात्रावासीय	300	29.89	4.59	5.54	598	>.01
	गैर-छात्रावासीय	300	27.84	4.46			
समग्र शैक्षिक व्यवहार	छात्रावासीय	300	196.24	12.07	10.10	598	>.01
	गैर-छात्रावासीय	300	186.98	10.10			

अध्ययन आदतें आयाम

तालिका 1 में वर्णित छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के अध्ययन आदत आयाम के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 95.98 तथा 91.44 है। स्पष्ट है कि छात्रावासीय विद्यार्थियों के अध्ययन आदत आयाम का मध्यमान गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 8.02 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर है। गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी पारिवारिक दायित्वों से मुक्त रहते हैं। उनके अध्ययन में व्यवधान की संभावना गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा कम होती है। समय व संसाधनों की उपलब्धता के कारण छात्रावासीय विद्यार्थी समय-सारणी अनुसार अध्ययन कार्य में लगे रहते हैं। इसलिए छात्रावासीय विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सार्थक रूप से गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों से उत्तम हो सकती हैं। डैडजी (2018) के शोध परिणाम में भी छात्रावास में रहने की अवधि व शैक्षिक व्यवहार में सार्थक सहसंबंध पाया गया तथा छात्रावास में रहने से विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार में सकारात्मक वृद्धि पाई गई। जो इस शोध अध्ययन के परिणाम की पुष्टि करता है।

शैक्षिक निष्पादन आयाम

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के शैक्षिक निष्पादन आयाम के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 70.37 तथा 67.69 है। स्पष्ट है कि छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक आयाम

© NCERT not to be republished

प्राप्तांकों का मध्यमान गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों से अधिक है। दोनों समूह के शैक्षिक निष्पादन प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 5.99 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि गैर-छात्रावासीय समूह की अपेक्षा छात्रावासीय समूह का शैक्षिक निष्पादन सार्थक रूप से श्रेष्ठ है। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्रावास में परीक्षाकाल में परीक्षा के प्रति गंभीर वातावरण बन जाता है, जिसमें विद्यार्थी दिन-रात अध्ययन करते रहते हैं। छात्रावास में उच्च गुणवत्तापूर्ण पाठ्यसामग्री, वरिष्ठ साथियों से सहायता तथा साथियों के साथ सामूहिक विचार-विमर्श के अवसरों से छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में वृद्धि होती है। इसलिए गैर-छात्रावासीय समूह से छात्रावासीय समूह का शैक्षिक निष्पादन श्रेष्ठ है। जुबैर (2011) ने भी अपने शोध अध्ययन में छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया, जिसमें छात्रावासीय समूह को श्रेष्ठ पाया गया। इससे इस शोध परिणाम को बल मिलता है।

तकनीक का प्रयोग आयाम

तालिका 1 में वर्णित छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के तकनीक का प्रयोग आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 29.89 तथा 27.84 है। दोनों समूहों में मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 5.54 है, जो कि स्वतंत्र्यांश की कोटि 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के तकनीक का प्रयोग में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों की अपेक्षा छात्रावासीय विद्यार्थी तकनीक का प्रयोग सार्थक रूप से अधिक करते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी घर से दूर रहते हैं इसलिए परिवार वालों से संपर्क बनाए रखने के लिए सामान्यतः सभी विद्यार्थियों के पास मोबाइल फोन रहता है, जिससे इंटरनेट का प्रयोग करते हुए वे बहुत सारी जानकारी प्राप्त करते हैं। छात्रावास में विद्यार्थियों के पास लैपटॉप, आईपैड, डेस्कटाप आदि उपकरण उपलब्ध रहते हैं। विद्यार्थी स्वयं तथा दूसरे साथियों के इन उपकरणों का प्रयोग करते हुए अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। छात्रावास में पर्याप्त समय तथा संसाधनों की उपलब्धता के कारण विद्यार्थियों को तकनीक के प्रयोग के अवसर गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों से अधिक प्राप्त होते हैं। इसलिए छात्रावासीय विद्यार्थियों का तकनीकी प्रयोग व्यवहार उत्तम है।

समग्र शैक्षिक व्यवहार

तालिका 1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि छात्रावासीय समूह के शैक्षिक व्यवहार प्राप्तांकों का मध्यमान 196.24 है, जबकि गैर-छात्रावासीय समूह का मध्यमान 186.98 है। स्पष्ट है कि छात्रावासीय समूह

© NCERT not to be republished

के समग्र शैक्षिक व्यवहार प्राप्तांकों का मध्यमान, गैर-छात्रावासीय समूह के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 10.10 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना ''छात्रावासीय एवं गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार में सार्थक अंतर है अर्थात् गैर-छात्रावासीय समूह की अपेक्षा छात्रावासीय समूह का शैक्षिक व्यवहार सार्थक रूप से श्रेष्ठ है। इसका कारण छात्रावासीय समूह का उच्च शैक्षिक निष्पादन, तकनीक का अधिक प्रयोग, समय व संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता, प्रतियोगितापूर्ण वातावरण, वरिष्ठ विद्यार्थियों से मार्गदर्शन के पर्याप्त अवसर तथा नोट्स व पुस्तकों की सुगम उपलब्धता हो सकते हैं। उल व अली (2015), डैडजी (2018), जैकब एवं कौशिक (2017) तथा स्वामी (2015) के शोध अध्ययनों में भी छात्रावासीय वातावरण की शैक्षिक व्यवहार में सकारात्मक भूमिका पाई गई है, जिससे इस शोध परिणाम को समर्थन मिलता है।

छात्रावासीय व गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के तीनों आयामों यथा अध्ययन आदतें, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीक का प्रयोग तथा समग्र शैक्षिक व्यवहार की तुलना को क्रमशः आरेख संख्या 1, 2, 3 व 4 में दर्शाया गया है।

छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार की तुलना करने के लिए संकलित प्राप्तांकों से मध्यमान,

तालिका 2— छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार के सांख्यिकीय मान

शैक्षिक व्यवहार एवं संबंधित आयाम	विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	स्वतंत्र्यांश	सार्थकता स्तर
अध्ययन आदतें	छात्र	300	93.11	7.71	2.01	598	>.05
	छात्राएँ	300	94.31	6.77			
शैक्षिक निष्पादन	छात्र	300	69.01	5.90	0.09	598	<.05
	छात्राएँ	300	69.05	5.37			
तकनीक का प्रयोग	छात्र	300	29.53	4.91	3.56	598	>.01
	छात्राएँ	300	28.19	4.25			
समग्र शैक्षिक व्यवहार	छात्र	300	191.66	12.48	0.10	598	<.05
	छात्राएँ	300	191.56	11.62			

© NCERT not to be republished

मानक विचलन तथा क्रांतिक-अनुपात मान की गणना की गई है, जिसे तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

अध्ययन आदतें आयाम

तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार की अध्ययन आदत आयाम के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 93.11 तथा 94.31 हैं। स्पष्ट है कि छात्रा समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान छात्र समूह के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 2.01 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना ''छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। दोनों समूहों में अंतर होने का कारण शायद यह हो सकता है कि छात्र समूह की खेल व व्यायाम में अधिक रुचि होती है। जिससे उनका समय व ऊर्जा इन खेलों में लग जाती है। जबकि छात्राएँ खेलकूद एवं घरेलू कार्यों में संलग्न रहते हुए भी अध्ययन कार्य पूर्ण कर लेती हैं। इस प्रकार दोनों समूहों की अध्ययन आदतों में अंतर हो सकता है।

शैक्षिक निष्पादन आयाम

तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्र समूह के शैक्षिक व्यवहार के शैक्षिक निष्पादन आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान 69.01 है जबकि छात्रा समूह के शैक्षिक निष्पादन आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान 69.05 है। स्पष्ट है कि छात्रा समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान छात्र समूह के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 0.09 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना ''छात्र-छात्राओं के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्र तथा छात्रा समूह के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अंतर परिलक्षित हो रहा है वह शायद न्यादर्श त्रुटि का कारण हो सकता है। इन दोनों समूहों में अंतर नहीं होने का कारण छात्र-छात्राओं में उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए समान प्रयास, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में समान सहभागिता और शैक्षिक संस्थानों का समान वातावरण हो सकते हैं। जुबैर (2011) के शोध अध्ययन में जेंडर भेद के आधार पर शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस प्रकार जुबैर के शोध परिणाम से इस शोध अध्ययन के परिणाम की सत्यता की पुष्टि होती है।

तकनीक का प्रयोग आयाम

तालिका 2 में दर्शाया गया है कि छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार के तकनीक का प्रयोग आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 29.53 व

© NCERT not to be republished

28.19 है। स्पष्ट है कि छात्र समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान छात्रा समूह के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 3.56 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "छात्र-छात्राओं के तकनीक प्रयोग व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्रा समूह की अपेक्षा छात्र समूह का तकनीक प्रयोग व्यवहार अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्राओं की अपेक्षा विद्यार्थियों को लैपटॉप, स्मार्ट फोन आदि अन्य तकनीकी उपकरण सुगमता से उपलब्ध हो जाते हैं। साथ ही, छात्राओं की अपेक्षा विद्यार्थियों को इन उपकरणों के प्रयोग के समय अभिभावकों की रोक-टोक का सामना नहीं करना पड़ता है, जिससे तकनीकी उपकरणों के प्रयोग के अधिक अवसरों से उनका तकनीकी प्रयोग व्यवहार छात्राओं से अधिक हो सकता है।

समग्र शैक्षिक व्यवहार

तालिका 2 में दर्शाया गया है कि छात्र समूह के समग्र शैक्षिक व्यवहार प्राप्तांकों का मध्यमान 191.66 है जबकि छात्रा समूह के शैक्षिक व्यवहार के प्राप्तांकों का मध्यमान 191.56 है। स्पष्ट है कि छात्र समूह के समग्र शैक्षिक व्यवहार प्राप्तांकों का मध्यमान छात्रा समूह के मध्यमान से थोड़ा-सा अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 0.10 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "छात्र एवं छात्राओं के समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को स्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि छात्र समूह तथा छात्रा समूह के शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इन दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अंतर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। इन दोनों समूहों में अंतर नहीं होने का कारण छात्र एवं छात्राओं का शिक्षा प्राप्ति के लिए समान रूप से प्रयासरत होना तथा समान वातावरण, सुविधाएँ तथा समान रूप में संसाधनों की उपलब्धता हो सकता है। साथ ही, विद्यालय तथा परिवार में छात्र-छात्राओं को शिक्षा प्राप्ति के लिए समान अवसर देना भी एक प्रमुख कारण हो सकता है।

छात्र व छात्राओं के शैक्षिक व्यवहार के तीनों आयामों यथा अध्ययन आदतें, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीक का प्रयोग तथा समग्र शैक्षिक व्यवहार की तुलना को क्रमशः आरेख संख्या 1, 2, 3 व 4 में दर्शाया गया है।

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार की तुलना करने के लिए संकलित प्राप्तांकों से मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात मान की गणना की गई है, जिसे तालिका 3 में प्रदर्शित किया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 3— ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के सांख्यिकीय मान का परिदृश्य

शैक्षिक व्यवहार एवं संबंधित आयाम	विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	स्वतंत्र्यांश	सार्थकता स्तर
अध्ययन आदतें	ग्रामीण	275	92.66	7.98	3.27	598	>.01
	शहरी	325	94.60	6.49			
शैक्षिक निष्पादन	ग्रामीण	275	68.87	5.84	0.64	598	<.05
	शहरी	325	69.17	5.46			
तकनीक का प्रयोग	ग्रामीण	275	28.48	4.52	2.16	598	>.05
	शहरी	325	29.30	4.75			
समग्र शैक्षिक व्यवहार	ग्रामीण	275	190.84	12.50	1.43	598	<.05
	शहरी	325	192.26	11.63			

अध्ययन आदतें आयाम

तालिका 3 के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार की अध्ययन आदतें आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 92.66 तथा 94.60 है। स्पष्ट है कि शहरी समूह की अध्ययन आदतें आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण समूह से अधिक है। दोनों समूहों में मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 3.27 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया। इन दोनों समूहों की अध्ययन आदतों में अंतर होने का कारण ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की कृषि, पशुपालन तथा अन्य दैनिक क्रियाकलापों में संलग्नता हो सकता है जिससे उनकी दिनचर्या अव्यवस्थित हो जाती है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक एवं अन्य सुविधाओं का अभाव होने से भी ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा होगा।

शैक्षिक निष्पादन आयाम

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान 68.87 जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान 69.17 है। स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन आयाम का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 0.64 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर

© NCERT not to be republished

नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। मध्यमानों में जो अंतर परिलक्षित हो रहा है वह न्यादर्श की त्रुटि के कारण हो सकता है। इन दोनों समूहों में अंतर नहीं होने के कारण समान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तत्परता, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में एकसमान सहभागिता, समान आयु वर्ग, समान शिक्षा स्तर आदि कारक उत्तरदायी हो सकते हैं। इसीलिए दोनों समूहों के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। त्रिपाठी एवं सिंह (2017) ने अपने शोध में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन की तुलना में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। अत: त्रिपाठी एवं सिंह के शोध परिणाम से इस शोध अध्ययन के परिणाम को बल मिलता है।

तकनीक का प्रयोग आयाम

तालिका 3 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के तकनीक का प्रयोग आयाम के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.48 तथा 29.30 है। स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 2.16 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के तकनीक का प्रयोग व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी समूह के तकनीक प्रयोग व्यवहार में सार्थक अंतर है। इसका कारण शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का नवीन तकनीक से परिचय होना, तकनीक के प्रयोग के प्रति जागरूकता, उनके आसपास तकनीकी संसाधनों की सुगम उपलब्धता हो सकता है।

समग्र शैक्षिक व्यवहार

तालिका 3 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 190.84 तथा 192.26 है। स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए क्रांतिक-अनुपात मान 1.43 है, जो कि स्वतंत्र्यांश 598 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इन दोनों समूहों के मध्यमानों में जो अंतर परिलक्षित हो रहा है, वह न्यादर्श की त्रुटि के कारण हो सकता है। इन दोनों समूहों में अंतर नहीं होने के कारण यह भी हो सकता है कि आधुनिक युग में शिक्षा के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अभिभावक बहुत सजग हो गए हैं और अपने पाल्यों को अच्छे से शिक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी बर्हिमुखी है और सामान्यतः सभी विद्यार्थी शैक्षिक तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में पूर्ण मनोयोग से सहभागिता करते हैं। इसलिए दोनों समूहों के शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

© NCERT not to be republished

जुबैर (2011) तथा त्रिपाठी एवं सिंह (2017) के शोध अध्ययन में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार में कोई अंतर नहीं पाया गया। इन शोध अध्ययनों से इस शोध अध्ययन के परिणाम की सत्यता की पुष्टि होती है।

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार के तीनों आयामों यथा अध्ययन आदतें, शैक्षिक निष्पादन एवं तकनीक का प्रयोग तथा समग्र शैक्षिक व्यवहार की तुलना को क्रमशः आरेख संख्या 1, 2, 3 व 4 में दर्शाया गया है।

आरेख संख्या 1— विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों की अध्ययन आदतों की तुलना

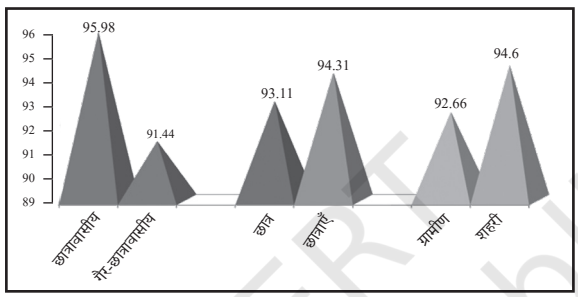

आरेख संख्या 2— विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों के शैक्षिक निष्पादन की तुलना

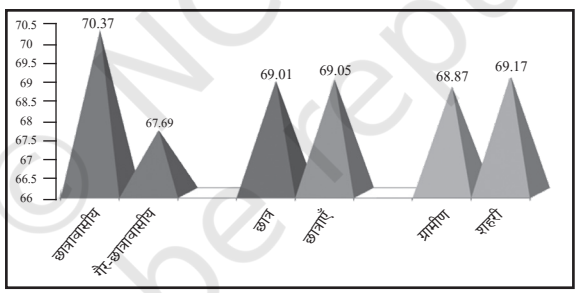

आरेख संख्या 3— विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों के तकनीक का प्रयोग की तुलना

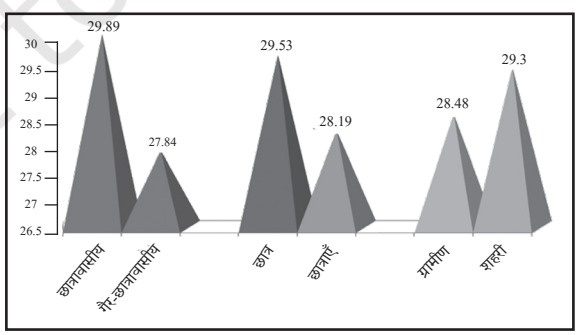

© NCERT not to be republished

आरेख संख्या 4— विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों के समग्र शैक्षिक व्यवहार की तुलना

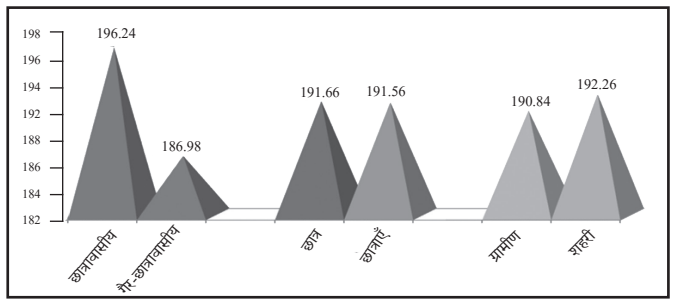

शोध निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- छात्रावासीय विद्यार्थी अध्ययन आदत, शैक्षिक निष्पादन, तकनीक का प्रयोग एवं समग्र शैक्षिक व्यवहार में गैर-छात्रावासीय विद्यार्थियों से श्रेष्ठ हैं।
- छात्राएँ अध्ययन आदतों में छात्रों से श्रेष्ठ हैं जबकि छात्र तकनीक के प्रयोग में छात्राओं से उत्तम हैं। शैक्षिक निष्पादन एवं समग्र शैक्षिक व्यवहार में छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- शहरी विद्यार्थी अध्ययन आदतों एवं तकनीक के प्रयोग में ग्रामीण विद्यार्थियों से श्रेष्ठ हैं। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन एवं समग्र शैक्षिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हो सकते हैं—

विद्यार्थियों के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण को उनके अनुरूप बनाए जाने में सहायता प्राप्त हो सकेगी। विद्यार्थियों को महाविद्यालय, अध्यापक, मित्रों तथा स्वयं के साथ उचित सामंजस्य विकसित करने हेतु प्रेरित किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करके उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए परिवार में एकांत स्थान की व्यवस्था के प्रति जागरूक बनाया जा सकेगा। छात्रावास की उपयोगिता को समझते हुए बच्चों को छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों के प्रति जागरूक किया जा सकेगा।

अभिभावकों के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर अभिभावकों में बालकों व बालिकाओं में बिना भेदभाव के दोनों के लिए समान सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों को नवीन तकनीक के प्रति जागरूक बनाकर ग्रामीण क्षेत्र में भी तकनीक के प्रयोग के अवसरों को बढ़ाया जा सकेगा। अभिभावकों को परामर्श प्रदान करके उन्हें शिक्षार्थी-बालिकाओं पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए दबाव

© NCERT not to be republished

बनाने की प्रवृत्ति को सुधारा जा सकेगा। ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों को जागरूक करके उन्हें छात्राओं की शिक्षा के प्रति प्रेरित किया जा सकेगा। दिव्यांग विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण को उन्नत बनाते हुए बच्चों के पोषण तथा अध्ययन के लिए समय व संसाधनों की व्यवस्था के प्रति अभिप्रेरित किया जा सकेगा।

अध्यापकों के लिए

अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों हेतु अभिविन्यास (ओरिएंटेशन) कार्यक्रमों का आयोजन कर उनके शैक्षिक व्यवहार को उन्नत बनाया जा सकेगा। विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत करके अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को विभिन्न महापुरुषों की जीवनी, प्रेरक प्रसंगों तथा उनके चित्रों के माध्यम से प्रेरित करके अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को महाविद्यालय में उपस्थिति के लिए प्रेरित करके अनुशासन व नियम पालन व्यवहार में उन्नत बनाया जा सकेगा। विद्यार्थियों को खेलकूद, सांस्कृतिक-कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता में सहभागिता के अवसर प्रदान करके उनकी विविध क्षमताओं को विकसित किया जा सकेगा।

प्रशासकों के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थित छात्रावास में विद्यार्थियों को प्राप्त होने वाली सुविधाओं यथा भोजन, विद्युत, पानी, पुस्तकालय, कंप्यूटर, इंटरनेट तथा चिकित्सा आदि सुविधाओं के स्तर में सुधार करके उन्हें उन्नत बनाया जा सकेगा। छात्रावासीय व्यवस्था को कंप्यूटीकृत करते हुए उसे और अधिक उन्नत बनाया जा सकेगा। छात्रावास में वार्डन तथा व्यवस्थापक को परामर्श प्रदान करके छात्रावास में अनुशासन स्तर सुधारा जा सकेगा। संस्थानों में पुस्तकालय व्यवस्था को सुधारकर उच्च कोटि का साहित्य उपलब्ध कराने से विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों को विकसित किया जा सकेगा।

नीति-निर्माताओं के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणाम नीति-निर्माताओं के लिए भी सहायक होंगे, जिसकी सहायता से वे इस तरह की नीतियों का निर्माण कर सकेंगे, जिसमें विद्यार्थियों को नवीन तकनीक का ज्ञान कराने तथा उसके द्वारा स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करने से विद्यार्थियों के शैक्षिक व्यवहार को उत्तम बनाया जा सकेगा। विद्यार्थियों को शैक्षिक तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में शामिल होने के अधिकाधिक अवसर प्रदान करके उनके शैक्षिक निष्पादन को उन्नत बनाया जा सकेगा। छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को यथा अवसाद, चिंता, तनाव एवं एकांतप्रियता आदि के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति करके छात्रावास की इन समस्याओं को दूर किया जा सकेगा।

संदर्भ

इफ्तकार, अमीना. 2015. ए क्वालीटेटिव स्टडी इनवेस्टिगेटिंग द इम्पैक्ट ऑफ हॉस्टल लाइफ. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमरजेन्सी मेंटल हेल्थ एंड ह्यूमन रेजीलेन्स*. वॉल्यूम 17, नंबर 1, पृष्ठ संख्या 511–515.

© NCERT not to be republished

उपाध्याय, चिंकी. 2016. ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एडजेस्टमेंट अमंग डे स्कॉलर्स एंड हॉस्टल स्टूडेन्ट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. 3(4) 63. DIP 18-01-108/20160304-

उल, मन्सूर और हुसैन अली. 2015. इम्पैक्ट ऑफ हॉस्टल स्टैण्डर्स सैटिक्सफ़ेक्शन ऑन देयर एकेडमिक परफोर्मेंस इन श्रीलंका यूनिवर्सिटी. *5 वाँ इंटरनेशनल सिमपोजियम*. 2015-IntSym2015, SEUSL.

कुमार, आशीष. 2012. *माध्यमिक विद्यालय में किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन*. अप्रकाशित पी-एच.डी. थीसिस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश.

गौड़, शोभा और सुशील कुमार. 2015. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनकी अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबंध का अध्ययन. *ह्युमेनीटिस एंड सोशल साइंस इंटरडिसीप्लेनरी एप्रोच*. वॉल्यूम 7, इश्यू 1, जून 2015.

चौधरी, मंजू. 2016. *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गृह वातावरण के संदर्भ में शैक्षिक अभिप्रेरणा का अधिगम आदत पर प्रभाव— एक अध्ययन*. अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान.

चौहान, श्रद्धा सिंह. 2016. *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन*. पीएच.डी. शोध प्रबंध. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

जुबैर, एम. 2011. छात्रावासीय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सांवेगिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन. एम.फ़िल. शिक्षाशास्त्र विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ.

जेस्ट, सनी, अजमिया अहमद, आवास्थ गोपी, ऐश्वर्या टॉम और मेघा कुरियन. 2018. जेंडर डिफरेंस इन इमोशनल इंटेलिजेंस अमंग एडोलिसेंट्स हॉस्टलर एंड डे स्कॉलर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च एंड एकेडमिक रिव्यू*. अप्रैल 2018, पृष्ठ संख्या 61–69.

जैकब, अशिन मर्लिन और अंजलि कौशिक. 2017. छात्रावासीय विद्यार्थियों तथा दिवा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य स्तर तथा शैक्षिक प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नर्सिंग मिडवाइफ*. वॉल्यूम 4, इश्यू 2, पृष्ठ संख्या 2–8.

डूलाल, दीपक. 2019. *लिविंग एंड लर्निंग इन हॉस्टल— ए केस स्टडी ऑफ द हॉस्टल ऑफ काठमांडू*. एम.फ़िल. थीसिस. स्कूल ऑफ एजुकेशन, काठमांडू यूनिवर्सिटी, नेपाल.

डैडजी, फिलोमेना. 2018. *एक्सप्लोरेट्री केस स्टडी ऑफ रेजिडेंस लाइफ एट ए घनाईयन पब्लिक यूनिवर्सिटी*. प्रोक्वेस्ट एल.एल.सी,, पी-एच.डी. डिजरटेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ फोनिक्स. http://www.proquest.com/en-US/products/dissertations/individuals

नायक, पी. के. और प्रियंका मरकाम. 2018. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च*. वॉल्यूम 3, इश्यू 3, मई 2018.

नायक, पुष्पा. 2010. *विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन*. (लघु शोध संकलन 2009–10) क्रियात्मक शोध एवं नवाचार प्रभाग. एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़.

पाण्डेय, अनुराधा. 2015. *उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं अध्ययन आदतों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन*. अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश.

© NCERT not to be republished

पाण्डेय, दीपेन्द्र कुमार. 2012. *छात्रावासीय तथा गैर-छात्रावासीय अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन*. शैक्षिक लघु शोध प्रबंध संकलन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर, छत्तीसगढ़.

फैजी, एम.एस.; उमर शरिदान, शेख मोहम्मद, नोरिजन वान, डॉन यंत्र, पोए हेन, यातया फौजी रमन, रोजलीना खालिद और वाई, मुफस्सिल. 2014. द प्रॉब्लम्स फेसड बाई एडोलेसेंट्स इन अडाप्टिंग देमसेल्व्स विद हॉस्टल लाइफ. *ब्रिटिश एंड सोशल साइंसेज रिव्यू*. 3(4), 2014, पृष्ठ संख्या 249–255, 20A.

मिश्रा, संगीता. 2017. *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि से सह-संबंधात्मक अध्ययन*. एम.एड. लघु शोध प्रबंध, बियानी गर्ल्स बी.एड. कालेज जयपुर, राजस्थान.

मुनीर, अमीना; खालिद सिरदा और सादिक रिफाट. 2016. प्रिवलेंस एंड कंपैरिजन ऑफ साइकोलॉजिकल प्रॉब्लम्स अमंग होस्टिलिटीज एंड डे स्कॉलर ऑफ यूनिवर्सिटी. *एकेडमिक रिसर्च इंटरनेशनल*. 7(1), जनवरी 2016, पृष्ठ संख्या 231–340.

यादव, संतोष कुमार. 2018. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशनल रिसर्च*. वॉल्यूम 3, इश्यू 2, मार्च 2018, पृष्ठ संख्या 295–297.

रिछारिया, ज्योति. 2012. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह वातावरण, विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी.

शर्मा, भावना और सिमरन टेकचंदानी. 2018. छात्रावासीय वातावरण का छात्राओं के व्यक्तित्व विकास तथा आत्मप्रबंधन कौशल पर प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी*. 3(9).

शाखा, जगरानी. 2010. *शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन*. लघु शोध संकलन (2009–10). क्रियात्मक शोध एवं नवाचार प्रभाग. एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर, छत्तीसगढ़.

शुक्ला, ज्योति. 2017. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन. *ईमरजिंग रिसर्च जर्नल* वॉल्यूम 2, इश्यू 1, जनवरी 2017, पृष्ठ संख्या 44–48.

सिंह, नीलू. 2016. विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लेनरी एजुकेशन एंड रिसर्च*. वॉल्यूम-1, इश्यू-02, अप्रैल 2006 पृष्ठ संख्या 31–34.

सिंह, बलवान. 2017. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल*. वॉल्यूम 3, इश्यू 2, सितंबर 2017, पृष्ठ संख्या 235–242.

स्वामी, शिल्पा. 2015. *उच्च प्राथमिक स्तर पर डे-बोर्डिंग व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सांवेगिक तथा सामाजिक समायोजन का अध्ययन*. अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस शिक्षा संस्थान, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान. http://hdl.handle.net/10603/139849.

त्रिपाठी, सुनील मणि और जय सिंह. 2017. जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन रिसर्च*. वॉल्यूम 2, इश्यू 1, जनवरी 2017, पृष्ठ संख्या 38–42.

© NCERT not to be republished